शिक्षक का अपने जीवन में काफी बच्चों से सामना होता है और बच्चों के जीवन में भी शिक्षक काफी अहम् भूमिका रखते हैं। ज्यादातर बच्चे अपने शिक्षकों का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं। आपको पता भी नहीं चलता कि कब आपकी कौन सी बात किसी छात्र के जीवन को एक नया मोड़ दे देती है। रुद्रप्रयाग जिले में शायद ही कोई शिक्षक या विद्यालय होगा जहाँ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, डांगी–गुनाऊ में कार्यरत शिक्षक हेमंत चौकियाल जी को कोई नहीं जानता होगा। अभी हाल ही में राष्ट्रीय स्तर पर हुई विज्ञान प्रदर्शनी में चौकियाल जी व उनके छात्र रोहित रौतेला ने अपने विद्यालय का नाम देशभर में जो रोशन किया है। सौम्य व सरल स्वभाव के चौकियाल जी पिछले तीन वर्षों से डांगी–गुनाऊ विद्यालय में कार्यरत हैं। रुद्रप्रयाग बाजार से विद्यालय की दूरी लगभग 15 किमी. है। सड़क से विद्यालय लगभग 1 किमी. की दूरी पर है। विद्यालय में दो और शिक्षक हैं तथा बच्चों की संख्या 14 हैं। चौकियाल जी ने पिछले 28 सालों के अपने शिक्षण काल में विभिन्न विद्यालयों में सेवायें दी हैं। स्यांसू, जाल–मल्ला, लडियासु विद्यालयों में अपनी सेवा देने के बाद वे 2015 में डांगी– गुनाऊ आये। वे अपनी बातचीत में बताते हैं कि 1991 में वे मृतक आश्रित शिक्षक के बतौर लगे थे। 1991–95 तक वे अप्रशिक्षित शिक्षक के रूप में काम करते रहे। परिवार में सबसे बड़े थे तो घर के काम और अन्य जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए उन्होंने 1995 में बी.एड. किया।

अपने अनुभवों को याद करते हुए चौकियाल जी बताते हैं कि उन्होंने अपने काम की शुरुआत समुदाय से रिश्ते बनाकर की। हालांकि यह इतना आसान नहीं था। समुदाय का अपने बच्चों और विद्यालय की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं था। ऐसे में उन्होंने विद्यालय में अभिभावकों की कई बैठकें बुलाई और इसी का नतीजा रहा कि वे संकुल स्तर पर मेले का आयोजन कर पाए। यह मेला उस समय काफी चर्चा में आया। इस मेले में लिए गये विषय पाठयक्रम आधारित थे जैसे– पारंपरिक वेशभूषा, गहने, बर्तन, औजार, पकवान आदि की प्रदर्शनी बच्चों द्वारा लगाई गयी। इस प्रकार चौकियाल जी ने ना सिर्फ एनसीएफ 2005 के उद्देश्य को साथ लेते हुए बच्चों को उनके वातावरण से जोड़ा बल्कि लोक संस्कृति को बढ़ावा देते हुए उनका अकादमिक पक्ष भी मजबूत किया। समुदाय का चौकियाल जी पर विश्वास इस कदर था, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता था कि लोगों ने प्रदर्शनी में अपने सोने से बने गहने (बुलाक, गुलोबंद) तक दे दिए। डांगी–गुनाऊ विद्यालय में आने के बाद एक बार फिर से समुदाय को साथ लेने एक चुनौती उनके सामने खड़ी थी। उनके अनुसार, जब वे शुरुआत में उस विद्यालय में आये तो उन्हें समुदाय का इतना सहयोग नहीं मिला। इसका उदाहरण उन्होंने कुछ इस प्रकार दिया– खेल प्रतियोगिताओं में जब बच्चे जिले के लिए चयनित हुए (जिनमें बालिकाएं भी शामिल थी), तो बच्चों के माता–पिता ने उन्हें शिक्षक के साथ भेजने से मना कर दिया। शायद वे अपने बच्चों की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त नहीं थे। परन्तु समय के साथ बच्चों के माता–पिता को भी समझ आ गया कि सर उनके बच्चों की भलाई के लिए ही ये सब कर रहे हैं। उनका समुदाय के साथ बहुत अच्छा सम्बन्ध है। एसएमसी मीटिंग हो या विद्यालय में होने वाला कोई कार्यक्रम, समुदाय के लोगों ने हमेशा से ही बढ़–चढ़कर भाग लिया है।

इस पर चौकियाल जी का मानना है, बच्चों पर परिवार और उसके सदस्यों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

कक्षाओं की विशेषता

विद्यालय में विषयवार घंटी नहीं लगती। सर का कहना है, घंटी बजाना विषयों के बीच एक अंतर विषयी दीवार खड़ा करना है। ऐसा करने से विद्यालय के अन्य शिक्षकों को भी कोई आपत्ति नहीं होती। कक्षा में आते ही वे अपना तकिया कलाम बोलते हैं– "आज क्या पढ़ना चाहते हो?'' ऐसा करें या वैसा? इस पर बच्चे एक आपसी सहमति बनाते हुए विषय का चयन करते हैं। बच्चों को अपने शिक्षक का उनके साथ नीचे बैठना आश्चर्यजनक नहीं लगता। कक्षा का वातावरण काफी रोचक और सौहार्दपूर्ण होता है। बच्चों को वे ज्यादातर समूह में ही बैठाते हैं। किसी विषय पर बातचीत करने के बाद बच्चों को उस विषय से आधारित प्रश्न दे दिए जाते हैं। बच्चों की कोशिश होती है कि वे खुद से ही प्रश्नों को हल करें। जरूरत पढ़ने पर बच्चे आपस में एक–दूसरे की सहायता करते हैं और फिर खुद से ही प्रश्न बनाकर उनको हल करते हैं। इस प्रकार से वे बच्चों के बीच एक सुगमकर्ता के रूप में काम करते हैं। उनका मानना है कि सारे बच्चे पढ़–लिख सकते हैं और ये भी कि यदि कोई बच्चा पढ़ नहीं पा रहा है तो शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के स्तर की पहचान कर उनके स्तरानुसार गतिविधिधियों का चयन करना होगा।

विद्यालय की दीवारें बच्चों और उनके शिक्षक की मेहनत का प्रमाण देती हैं। चौकियाल जी विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान लगभग सभी विषय पढ़ाते हैं। उनका अकादमिक पक्ष काफी मजबूत नजर आता है। हॉल में थर्मामीटर के साथ टंगा, दो साल के तापमान को दर्शाता चार्ट (जिसमें बच्चे सुबह, दिन और छुट्टी के वक्त का तापमान नोट करते हैं), राज्यसभा और लोकसभा को दर्शाता चार्ट, पुरानी मुद्राओं से आच्छादित चार्ट (जिसमें सर और बच्चों द्वारा संकलित पुराने सिक्कों और नोटों को चिपकाया गया है), विज्ञान के विभिन्न आविष्कार वाला चार्ट तथा बच्चों के सवालों से भरा चार्ट, जिससे उनकी चीजों को जानने की उत्सुकता तथा जिज्ञासा झलकती है, इस बात का प्रमाण हैं। कक्षाओं में भी पाठ आधारित चार्ट्स लगे हैं जिनका समय–समय पर पुनरावलोकन किया जाता है। चौकियाल जी की कोशिश ज्यादातर यही रहती है कि बच्चों की तरफ से ज्यादा प्रतिक्रियाएं आये। फिर चाहे सवालों का पहाड़ ही क्यों न खड़ा हो जाए। बच्चों के सवालों के लिये उन्होंने एक चार्ट लगाया है, जिसमें बच्चे अपने सवालों को लिखते हैं। ये सवाल किसी भी विषय के होते हैं।

समय–समय पर वे इन सवालों के जवाब ढूँढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

कुछ सवालों के जवाब बच्चों को विषय सम्बन्धी टीएलएम से मिल जाते हैं। चौकियाल जी ने काफी टीएलएम जुटाया है, जिसके रखरखाव की जिम्मेदारी बच्चों की ही है। समय–समय पर इन TLM में परिवर्तन भी होता है। वे टीएलएम भी आस–पास के परिवेश से ही लाते हैं। इससे वे बच्चों को यह भी संदेश देते हैं कि भले ही गाँव में लोग पढ़े–लिखे नहीं थे, परन्तु उन्हें आस–पास की चीजों को उपयोग करना आता था, भले ही फिर वे उसके पीछे के कारणों को नहीं जानते हों। वे पढ़ाते समय अधिकतर उदाहरण, स्थानीय परिवेश से लेते हैं। उदाहरण के तौर पर, विज्ञान में अम्ल, क्षार और लवण पढ़ाने के दौरान प्रयोगों के बाद उन्होंने कुछ उदाहरण स्थानीय परिवेश के दिए, जैसे– मधुमक्खी के डंक मारने पर, गांव–घरों में राख, टूथपेस्ट आदि क्षारों का प्रयोग करना। ऐसा ही एक उदाहरण है, प्रत्येक महीने बच्चों द्वारा उनके वजन और लम्बाई में बढ़ोत्तरी को चार्ट पर दर्ज करना। इस प्रकार वे अपने वजन और लम्बाई में अंतर देख पाते हैं। उसके अनुसार वे अपने खानपान में चौकियाल जी से चर्चा कर बदलाव भी लाते हैं। इससे बच्चे आंकड़ों का विश्लेषण करना भी सीखे हैं। इन सबसे बच्चे चीजों को जल्दी समझ जाते हैं। जब लगता है कि किसी बच्चे को किसी विषय को समझने में ज्यादा समय लगेगा तो वे खाली समय में उस बच्चे के साथ उस विषय पर काम करते हैं। जिन बच्चों में आत्मविश्वास की कमी है, उन बच्चों को वे अधिक काम सौंपते हैं, जिससे बच्चे में आत्मविश्वास आये और जिम्मेदारियां लेना सीखे। 2–3 बच्चों के उदाहरण देते हुए वे बताते हैं कि जिम्मेदारियां देने पर इन बच्चों में आत्मविश्वास के साथ–साथ नेतृत्व की भावना की बढ़ोतरी हुई है।

समय–समय पर वे बच्चों के कमजोर पक्षों पर काम करते रहते हैं। बच्चों के मन को और अधिक जानने के लिए उन्होंने 2–3 बॉक्स रखे हैं, जिनके नाम अलग–अलग हैं। जैसे 'मन की बात'– जिसमें बच्चों को कुछ भी लिखने की आजादी है। बच्चे ज्यादातर इसमें एक–दूसरे की कमियां और खामियां लिखते हैं। एक और चीज जो बच्चों ने खुद से ईजाद की, वो ये कि बच्चों को यदि घर में कोई बात परेशान कर रही है तो बच्चे इस बॉक्स के जरिये साझा करते हैं। इसके अलावा एक और बॉक्स का नाम है 'नींद में मेरा सपना'– जिसमें बच्चे सपनों के बारे में लिख कर उसे बॉक्स में डाल देते हैं। इसके बाद वे एक–दूसरे से चर्चा भी करते हैं। और तीसरे बॉक्स का नाम है– 'मुझे कुछ कहना है'– यह भी बहुत कुछ 'मन की बात' वाले बॉक्स की ही तरह है। यदि बच्चों

को शिक्षकों की कोई बात अच्छी नहीं लगती तो बच्चे एक कागज पर लिखकर उस बॉक्स में डाल देते हैं। इन सभी बॉक्स की मदद से सर बच्चों के बारे में काफी कुछ जानकारी जुटा पाए हैं। खासकर उन बच्चों के बारे में जो बहुत कम बोलते हैं। सर की हमेशा यही कोशिश रहती है कि बच्चे हमेशा साथ में मिल–जुलकर काम करें और इसका परिणाम बच्चों में दिखता है। इसके अलावा सर बच्चों को अलग–अलग चीजें करते रहने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। उनमें शामिल है–स्वेटर बुनना (सिलाइयों की सहायता से), मिट्टी के बर्तन बनाना, डायरी लिखना (मासिक और वार्षिक)। कभी–कभी बच्चों के साथ खेलते भी हैं। कैरम, लूडो, क्रिकेट ये सारे खेल बच्चे सर के साथ खेलते हैं। खेल के दौरान लड़के और लड़कियों को समान अवसर मिलता हैं और बच्चों के बीच लड़ाई होने पर पहले तो बच्चे उसे खुद से सुलझाते हैं, वरना सर की मदद भी ली जाती है।

समय–समय पर विद्यालय में कार्यक्रम होते रहते हैं, इनमें हर साल होने वाला वार्षिकोत्सव, विज्ञान मेला, शैक्षिक भ्रमण, 'मन्दाकिनी की आवाज रेडियो स्टेशन पर' बच्चों द्वारा प्रस्तुति और अभी हाल ही में महिला दिवस पर कार्यक्रम आदि। चौकियाल जी का कहना है बच्चों को यदि समय–समय पर अपनी बातों को रखने के लिए मंच मिलता रहे तो बच्चे आगे का रास्ता खुद ही तैयार कर लेते हैं। इन कार्यक्रमों के जरिये भूतपूर्व छात्र को भी विद्यालय में आने का अवसर मिलता है और इसी बहाने वे अपने अनुभव बाकी बच्चों से साझा करते रहते हैं। कुछ दिन पहले उन्होंने अमर उजाला की 'अपराजिता मुहिम' के साथ मिलकर एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें विभिन्न विभागों से आई महिला अधिकारियों ने शिरकत की तथा महिलाओं से जुड़े विषयों पर खुलकर बातचीत की गयी जिसमें महिलाओं की सुरक्षा, अपने अधिकारों के प्रति सजगता, माहवारी से जुड़ी बातचीत शामिल थी। उनकी यह पहल उनमें समाज के संवेदनशील मुद्दों के प्रति सजगता दिखाती है। शिक्षकों को समाज का एक अभिन्न अंग मानते हुए वे अपनी बात रखते हैं कि "एक शिक्षक के जीवन में उनका काफी बच्चों से सामना होता है और बच्चों के जीवन में शिक्षक काफी अहम् भूमिका रखते हैं। ज्यादातर बच्चे अपने शिक्षकों का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं। आपको पता भी नहीं चलता कि कब आपकी कौन सी बात किसी छात्र के जीवन को एक नया मोड़ दे देती है।" साथी शिक्षकों को भी वे प्रोत्साहित करते रहते हैं। उनके विद्यालय में अन्य शिक्षक भी उनके विचारों से सहमत रहते हैं। शिक्षकों के बीच उन्हें 'एक आदर्श शिक्षक' के रूप में जाना जाता है। सर ज्यादा से ज्यादा शिक्षक संगोष्ठी में शिरकत करने के लिए तत्पर रहते हैं और नयी–नयी चीजों को सीखकर अपने विद्यालय में जरूर प्रयोग करते हैं।

(हेमंत चौकियाल की अंकिता डोंगरियाल से हुई बातचीत पर आधारित)

बच्चों के नामांकन बढ़ाने की पहल करता एक स्कूल

विश्वजीत सिंह कुशवाह
सहायक अध्यापक
माध्यमिक विद्यालय ठिबगांव बुजुर्ग
खरगोन, मध्यप्रदेश

प्रधानाध्यापक	–	**राजेश कुशवाह**
सहायक अध्यापिका	–	**वर्षा प्रजापति**
भोजन माता	–	**रक्षा, सेवन्ती, किरन**
नामांकन	–	**113**